सद्ज्ञान ग्रन्थ माला का तेतीसवां पुष्प— ३३

आकृति देखकर मनुष्य की पहिचान

—श्रीराम शर्मा आचार्य ।

आकृति देखकर मनुष्य की पहचान

लेखक—

पं० श्रीराम शर्मा, आचार्य ।

प्रकाशक—

'अखण्ड-ज्योति' कार्यालय, मथुरा ।

द्वितीयवार] सम्वत् २००१ वि० [मूल्य ।=)

आकृति विद्या भाग्यवाद नहीं है !

एक बात स्मरण रखने की है कि आकृति विज्ञान भाग्यवाद का किसी भी प्रकार समर्थक नहीं है। गुण, कर्म और स्वभाव में जो अन्तर आते हैं उनके अनुसार चहरे का रंग ढङ्ग भी बदल जाता है, आकृति विद्या का ज्ञाता एक समय में एक मनुष्य के जो लक्षण बताता है, यदि उस व्यक्ति का स्वभाव बदल जाय तो उसे उसके लक्षण भी बदले हुए मिलेंगे। यह ठीक है कि ढांचा नहीं बदलता, ढांचे का सम्बन्ध पूर्व जन्मों के सञ्चित संस्कारों से होता है। सुन्दर सुडौल अंगों वाला व्यक्ति पूर्व जन्म का शुभ कर्म कर्ता तथा कुरूप और बेडौल अङ्गों वाला पूर्व जन्म में अशुभ कर्म कर्ता रहा होगा तदनुसार उन संस्कारों की प्रेरणा से इस जन्म में सुन्दरता या कुरूपता प्राप्त हुई है यह मान्यता ठीक है। यह जन्म जात ढांचे और रंग रूप बदले नहीं जा सकते, उन्हें देख कर जन्म जन्मान्तरों के कुछ स्वभाव और संस्कारों का परिचय प्राप्त होता है, पर ऐसी बात नहीं कि वर्तमान जन्म में उन संस्कारों में परिवर्तन करना संभव न हो। मनुष्य को ईश्वर ने पूर्ण स्वतन्त्र बनाकर भेजा है वह स्वेच्छानुसार पुराने सब स्वभावों को बदल कर नये ढांचे में ढल सकता है।

आकृति देखकर मनुष्य की पहचान ।

चेहरा, आन्तरिक स्थिति का दर्पण है ।

अपने रोजमर्रा के जीवन में जितने लोगों के सम्पर्क में आता है उनकी आकृति देखकर वह इसका बहुत कुछ अन्दाज लगा लेता है कि इनमें से कौन किस ढङ्ग का है, उसका स्वभाव चाल चलन और चरित्र कैसा है। यह अन्दाज बहुत अंशों में सही उतरता है। यद्यपि कभी कभी बनावट के चकाचौंध में धोखा भी हो जाता है पर अधिकांश में शकल सूरत देखकर यह जान लिया जाता है कि यह आदमी किस मिट्टी से बना है। मनुष्यों को पहचानने की कला में जो जितना ही प्रवीण होता है वह अपने व्यवसाय में उतना अधिक निश्चिन्त रहता है, जैसे आदमी से तैसी ही आशा रखने का मार्ग मिल जाय तो ठगे जाने का भय कम रहता है और लाभदायक सुविधाएं सहज ही प्राप्त हो जाती हैं।

बहुत पूर्वकाल से इस विद्या की ढूँढ खोज जारी है, अनेक अन्वेषकों ने इस दिशा में बहुत खोज की है और गोता लगाने पर जो रत्न उन्हें मिले हैं उनको सर्वसाधारण के सामने प्रकट किया है। महाभारत एवं वेद पुराण और कादम्बरी आदि ग्रन्थों से यह पता चलता है कि इस विद्या से भारतवासी पुराने समय से परिचित हैं। वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड में कथा है कि जब त्रिजटा राक्षसी ने सीता को राम की मृत्यु हो जाने का झूँठा संवाद सुनाया तो सीता ने उत्तर दिया कि—" हे

इस पुस्तक में कोई दो प्राणी एक सी आकृति के नहीं होते, सबकी आकृति में कुछ न कुछ अन्तर अवश्य पाया जाता है. कुदरत ने अपनी कारीगरी हरएक प्राणी पर अलग अलग दर्शाई है, एक सांचे में सबको ढालने की वेगार नहीं भुगती है वरन् हर एक मूर्ति को निराले दर्ज तरीके के साथ गढ़ा है। इस विभिन्नता के कारण यह उदाहरण भी नहीं बताया जा सकता कि इस प्रकार के अंग प्रत्यंगों वाले इस प्रकार के होते हैं, क्योंकि जिस आदमी की आकृति का उदाहरण दिया जायगा उसकी जोड़ी का दूसरा आदमी सृष्टि में मिल सकना कठिन है। फिर भी कुछ मोटी मोटी रूप रेखाऐं बताई जा सकती हैं, कछ ऐसा श्रेणी विभाजन किया जा सकता कि अमुक ढांचे की अमुक आकृति हो तो उसका यह परिणाम होगा।

केवल अंग प्रत्यंगों की बनावट से ही ठीक और अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुंचा जा सकता। किसी व्यक्ति का लाक्षणिक परीक्षण करने के लिए उसकी चाल ढाल, भाव भंगी, मुख मुद्रा, तौर तरीका, वात करने उठने बैठने का ढंग आदि बातों पर भी विचार करना होगा। जिस प्रकार गंध सूंघकर आप थैले में वंद रखी हुई मिर्च, हींग, कपूर, इलाइची आदि को बिना देखे भी जान लेते हैं उसी प्रकार शरीर के बाहरी भागों पर जो लक्षण बिखरे पड़े हैं उन्हें देखकर यह भी जान सकते हैं कि इस मनुष्य के विचार, स्वभाव, तथा कार्य किस प्रकार के होंगे। यहां भ्रम में पड़ने की कोई बात नहीं है। आकृति की बनावट के कारण स्वभाव नहीं बनता वरन् स्वभाव के कारण आकृति का निर्माण होता है। स्थूल शरीर की एक धुंधली सी छाया हर वक्त साथ साथ फिरा करती है, सूक्ष्म शरीर की भी एक छाया है जो जरा गहराई के साथ दृष्टि डालने से लोगों की आकृति पर चढ़ती हुई दिखाई देती है। पेट में जो कुछ भरा है वह

बाह्य लक्षणों से प्रकट हुए बिना नहीं रहता। प्याज पेट में भीतर पहुंच जाय तो भी उसकी गंध मुंहमें आती रहती है, इसी प्रकार आन्तरिक विचार और व्यवहारों की छाया चहरे पर दिखाई देने लगती है। यही कारण है कि आम तौर पर भले बुरे की पहचान आसानी से हो सकती हैं, धोखाखाने या भ्रम में पड़ने के अवसर तो कभी कभी ही सामने आते हैं।

मनुष्य के कार्य आमतौर से उसके विचारों के परिणाम होते हैं। यह विचार आन्तरिक विश्वासों का परिणाम होते हैं। दूसरे शब्दों में इसी बात को यों कहा जा सकता है कि आन्तरिक भावनाओं की प्रेरणा से ही विचार और कार्यों की उत्पत्ति होती हैं, जिसका हृदय जैसा होगा वह वैसे ही विचार करेगा और वैसे कार्यों में प्रवृत्त रहेगा। सम्पूर्ण शरीर में चहरा ऐसा भाग है, जिस पर आन्तरिक बिचार धारा और भावनाओं के चित्र बहुत कुछ झलक आते हैं, अन्य अंगों की अपेक्षा चहरे का निर्माण अधिक कोमल तत्वों से हुआ हैं, मैले पानी की अपेक्षा साफ पानी में परछाईं अधिक साफ दिखाई पड़ती है इसी प्रकार अन्य अंगों की अपेक्षा चहरे पर आन्तरिक भावनाओं का प्रदर्शन अधिक स्पष्टता के साथ होता है। यह विचार और विश्वास जब तक निर्बल और डगमग होते हैं तब तक तो बात दूसरी है पर जब मनोगत भावनाएं दृढ़ हो जाती हैं तो उनको प्रकट करने वाले चिन्ह चहरे पर उग आते हैं। आपने देखा होगा कि यदि कोई आदमी चिन्ता, शोक, क्लेश या वेदना के विचारों में डूबा हुआ बैठा होता है तो उसके चेहरे की पेशियां दूसरी स्थिति में होती हैं किन्तु जब यह आनंद से प्रफुल्लित होता है तो होट, पलक, गाल, कनपटी, मस्तक की चमड़ी में दूसरे ही तरह की सलवटें पड़ जाती हैं। हँसोड मनुष्यों की आंखों की बगल में पतली रेखाएं पड़जाती हैं इसी प्रकार क्रोधी

व्यक्ति की भवों में बल पड़ने की, माथे पर खिंचाव की लकीरें बन जाती हैं। इसी प्रकार अन्य प्रकार के विचारों के कारण आकृति के ऊपर जो असर पड़ता है उसके कारण कुछ खास तरह से चिन्ह दाग, रेखा आदि बन जाते हैं। जैसे जैसे वे भले बुरे विचार मजबूत और पुराने होते जाते हैं वैसे ही यह चिन्ह भी स्पष्ट तथा गहरे बन जाते हैं।

दार्शनिक अरस्तू के समय के विद्वानों का मत था कि पशुओं के चेहरे से मनुष्य के चेहरे की तुलना करके उसके स्वभाव का पता लगाया जा सकता है। जिस आदमी की शकल सूरत जिस जानवर से मिलती जुलती होगी उसका स्वभाव भी उसके ही समान होगा। जैसे भेड़ की सी शक्ल मूर्ख होना प्रकट करती है, इसी प्रकार सियार की चालाकी, शेर की बहादुरी, भेड़िये की क्रूरता, तेंदुए की चपलता, सूअर की मलीनता, कुत्ते की चापलूसी, भैंसे की आलसीपन, गधे की बुद्धिहीनता प्रकट करती है। यह मिलान आज कल भी ठीक बैठता है पर अब तो इस विद्या ने बहुत तरक्की करली है और अन्य बहुत सी बातें भी मालूम होगई हैं।

निस्संदेह चहरा मनुष्य की आन्तरिक स्थित को द[र्पण] के समान दिखा देता है। आवश्यकता इस बात की है कि उ[से] देखने और समझने योग्य ज्योति आंखों में हो। इस पुस्तक में चहरे के खाल, भवें, मस्तक, कान, नाक, दांत, ठुड्डी, मुँह तथा आंखों के संबंध में हम लिखेंगे, हस्त रेखा, छाती, हाथ, पांव, कमर, पीठ आदि अंगों के बारे में शीघ्र ही एक अलग पुस्तक प्रकाशित करेंगे।

किसी हाट बाजार में बैठकर सुस्ताती हुई रूपवती [मां]/युवती के समीप खड़े हूजिए और देखते रहिए कि उधर से निकलने वाले लोगों की किस प्रकार की दृष्टि उसपर पड़ती है

स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध, बालक, बालिका दृष्टि उस युवती पर जायंगी पर उनमें एक दूसरे की अपेक्षा बहुत अन्तर होगा। किसी की दृष्टि में वासना, किसी में कामुकता, किसी में स्नेह, किसी में भूख, किसी में लालच, किसी में क्रुद्ध, किसी में तिरष्कार, किसी में वैराग्य, किसी में घृणा भरी हुई आपको दिखाई देगी। यह विभिन्नतायें बताती हैं कि उन देखने वालों में से किस किस का कैसा स्वभाव है। विगत जीवन में इस प्रकार की किसी युवती से जिसे जैसा वास्ता पड़ा होगा उसकी वैसी ही अनुभूति जागृत होगी। जिस वृद्धा को अपनी इतनी ही बड़ी ऐसी ही पुत्री का वियोग सहना पड़ा होगा उसके नेत्रों में इस अज्ञान युवती के प्रति भी वात्सल्य भाव उमड़ जावेगा। देखने वाला बुढ़िया की आंखों में आंसू देखकर किसी पद तक उसका भूत और भविष्यत जान सकता है। भूत यह कि इस वृद्धा को इस प्रकार की कोई लड़की कभी प्यारी रही है, वर्तमान कि अब उसका वियोग इसे सहना पड़ रहा है। यह तो एक सामयिक घटना हुई, किसी घटना का कोई जोरदार प्रभाव पड़े तो उसके संस्कार गहरे उतर जाते हैं और वे किसी साधारण समय में भी नेत्र आदि अंगों में जमे हुए भाव अन्य लक्षणों को देखकर पहचाने जा रहे हैं। आकृति विज्ञान का यही आधार है।

कहानी तथा उपन्यासों का लेखक अपने पात्र का चरित्र चित्रण करते समय, उनकी बोल चाल, रहन, सहन, मकान, कपड़े शकल सूरत का भी वर्णन करके अपनी रचना को हृदयग्राही बताते हैं। सुयोग्य लेखक जानते हैं कि भीतरी चरित्र बाहरी रंग ढंग में प्रकट होकर रहता है, इसलिए उसका वर्णन करने से यह सिद्ध होता है कि लेखक मानवीय आकृति विज्ञान से किस हद तक जानकारी रखते हैं।

एक आश्चर्यजनक बात यह है कि मनुष्य के स्वभाव
अनुसार उसके सभी अङ्गों में लक्षण प्रकट होते हैं। दुष्ट दुर्ज
के नेत्रों से दुष्टता टपकती हो सो बात नहीं उसके हर एक अ
पर बारीक दृष्टि डालिए वे सभी एक इस प्रकार की विशेष
लिए हुए होंगे सो प्रत्यक्ष रूप से उनके दुर्गुणों की साक्षी दे र
होगी। इसी प्रकार सदाचारी और सज्जनों के चहरे पर अ
ढंग की एक सज्जनतायुक्त विशेषता होती है। काला, गो
सुन्दर, कुरूप, कैसा ही व्यक्ति क्यों न हो उसकी बुरी आदतों
कारण सुन्दर आगों में भी भोंड़ापन आजायगा, जो सुसंस्कृत
वे अष्टावक्र या सुकरात की तरह कुरूप क्यों न हो उनके अ
अपनी बनावट में खड़े रहते हुए भी प्रामाणिकता की साक्षी दे
रहेंगे। यह रचना आदतों के कारण बनती या बिगड़ती रह
है एक सज्जन व्यक्ति जब कुमार्ग की ओर चलता है तो उस
सज्जनता के चिन्ह घटते हैं और विभिन्न अंगों में वे लक्ष
उदय हो जाते हैं जिन्हें देखकर दुर्जनता को पहचा
सकता है। हाथों की रेखाऐं घटती बढ़ती हैं उसमें से
नई निकलती हैं कुछ लुप्त होजाती हैं, यह परिवर्तन आ
और विचार में अन्तर आने के कारण होता है। इसी प्र
स्वभाव और व्यवहार के कारण सूक्ष्म रूप से मन और श
पर जो प्रभाव पड़ता है उसके लिए कई प्रकार के विचित्र चि
उत्पन्न हो जाते हैं तथा अंगों के ढांचें कुछ विचित्र तरीके
हेर फेर हो जाता है। आध्यात्मिक पुरुष इन्हीं लक्षणों
देखकर मनुष्य की भीतरी जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।
का पता होने से परिणाम की कल्पना सहज ही की जा स
हैं जैसे कोई व्यक्ति विद्वान्, वक्ता और सद्गुणी हो तो
यास ही यह कह सकते हैं कि "इसे जनता आदर मिलेगा"
प्रकार शारीरिक चिन्हों से भीतरी योग्यताओं का पता लगत

उसको भविष्य फल की भी बहुत हद तक ऐसी कल्पना की जा सकती है जो अन्त में सच निकले। इस प्रकार आकृति देखकर किसी मनुष्य का चरित्र जानना तथा उसका भविष्य बताना दोनों ही सम्भव हैं।

आकृति परिज्ञान विद्या एक वैज्ञानिक क्रिया पद्धति है ऐसा कदापि नहीं कहता कि—"मनुष्य भाग्य का पुतला है या विधाता ने उसे जैसा बना रखा है वैसा रहना पड़ेगा।" भाग्यवाद को इस विद्या के साथ जोड़ना एक बहुत बड़ी गलती करना है। मानसून हवाओं को देखकर यदि कोई वायु विद्या विशारद शीघ्र वर्षा होने की घोषणा करता है या मच्छड़ों की वृद्धि को देखकर कोई डाक्टर मलेरिया की चेतावनी देता है या गवाहों के बयान सुनकर कोई कानूनवेत्ता मुकदमा हार जाने की बात कहता है तो यह न समझना चाहिए कि यह सब बातें भाग्य में लिखी हुई थी जिन्हें इन लोगों ने किसी गुप्त ज्ञान से जान लिया है। वास्तव में वायु विद्या विशारद, डाक्टर तथा कानूनवेत्ता महानुभावों ने जो भविष्य वाणियां की थीं वे सामयिक स्थिति को देखते हुए उनके परिणामों के ज्ञान के आधार पर की थीं। यदि उनमें कुछ परिवर्तन किया जा सके तो फल भी बदल सकता है, मच्छड़ों को यदि मार भगाया जाय तो डाक्टर की चेतावनी पत्थर की लकीर न रहेगी। यही बात आकृति विद्या के सम्बन्ध में है, किसी मनुष्य का भूत भविष्य और वर्तमान इसके द्वारा कहा जा सकता है, भूगर्भ विद्या के ज्ञाता जमीन देखकर निकाले हुए एक पत्थर के टुकड़े के आधार पर अनेक ऐतिहासिक तथ्य खोज निकालते हैं फिर आकृति की बारीकियों का निरीक्षण करके मनुष्य जीवन के आगे पीछे की बहुत सी बातें भी कही जा सकती हैं, किन्तु स्मरण रखना चाहिए कि यह कथन अन्वेषण और अनुभव की

बुद्धि सङ्गत वैज्ञानिक विधि से ही किया जा रहा है। इ
ऐसी कोई बात नहीं है कि आदमी को ब्रह्मा जी ने एक गो
गणेश भाग्य का पुतला बनाकर भेजा हो। मनुष्य अपने आप
चाहे जैसा बनाने में पूर्णतया स्वतन्त्र है।

कभी कभी आकृति विद्या के आधार पर कही हुई
बातें ठीक नहीं बैठती इसके दो कारण हैं एक तो यह कि
व्यक्ति में अपना स्वभाव बदल डाला है किन्तु शरीर
प्रकटित चिन्हों को बदलने में कुछ अड़चन हुई हो अथवा
चिन्ह अभी प्रकट न हुए हों। दूसरा कारण यह है कि फल क
वाले से लक्षण पहचानने तथा फल कहने में कुछ गलती हुई
इन कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए जब असफलता मिले
हताश न होकर कारण को ढूँढना चाहिए और एक अन्वे
की भांति वास्तविकता का पता लगाते हुए इस विज्ञान को अ
बढ़ाने में सहायता करनी चाहिए।

❀ बाल ❀

बाल प्रायः हर एक पशु पक्षी के शरीर पर होते
प्रकृति ने इन्हें भीतरी शक्ति की रक्षा के लिए बनाया है। अ
की गर्मी को सुरक्षित रखने और अपव्यय न होने देने का
इनके द्वारा पूरा होता रहता है। बड़ी चीज के लिए सुरक्षा
भी बड़ा ही प्रबन्ध करना पड़ता है। इसलिए अधिक बलश
जीवों के शरीर पर अधिक बाल और कम बल वाले जीवों
शरीर पर कम बाल पाये जायंगे। साथ ही शरीर में जो भ
अधिक महत्व पूर्ण होता है उसमें बाल अधिक होते हैं। जि
मनुष्य के शरीर पर अधिक बाल हों समझना चाहिए कि उस
जीवनी शक्ति अधिक है। मनुष्य बुद्धि जीवी प्राणी है इसलि
मस्तिष्क की रक्षा के लिए सिर के ऊपर अधिक बाल पाये जा

हैं। पौरुष एवं ओज की ग्रन्थियों से दाढ़ी, मूछों के बाल संबंधित हैं, जिनका मस्तिष्क अच्छा होता है उनके सिर पर बालों की प्रचुरता रहती है, जिनमें ओज, पौरुष एवं दृढ़ता होती है उनकी दाढ़ी मूँछों पर खूब बाल निकलते हैं। जिनमें काम वासना अधिक होती है। उनके गुप्त अंगों के समीप बालों की अधिकता रहती है। जिनका हृदय और कलेजा मजबूत होता है उनकी छाती पर बाल ज्यादा रहेंगे। इनमें से जिस स्थान के बाल कम; हलके, निर्बल, टूटे फूटे से रहें समझना चाहिए कि उस स्थान पर रहने वाली शक्ति में न्यूनता है। गंजे आदमी अल्प बुद्धि होते हैं। जिसकी दाढ़ी मूछों पर कम बाल होंगे उसमें बहादुरी, उत्साह तथा पौरुष की कमी रहेगी। छाती पर बाल न हों तो दिल औह कलेजा कमजोर होगा। नपुंसकों के गुप्ताङ्गों पर बालों की कमी रहती हैं। पुराने लोग मूँछ और छाती पर बालों से रहित व्यक्ति को अशुभ मानते हैं, इस मान्यता का यही कारण है। वे प्राचीन विश्वास इसी तथ्य पर निर्भर हैं कि जो अङ्ग निर्बल होंगे उनका उत्पादन और संरक्षण भी थोड़ा सा ही दिखाई देगा।

कड़े, मोटे तथा बड़े बाल जिद्दीपन तथा खूंखार होने के चिन्ह हैं। इसके विपरीत मुलायम और छोटे रोंए वाले समझाने से समझ जाने वाले तथा परिश्रमी होते हैं। जंगली भैंसे के शरीर पर कड़े, मोटे तथा गझिन बाल होते हैं, वह परले सिरे का खूंखार और जिद्दी होता है, इसके विपरीत छोटे और मुला-यम रोम वाला शेर जैसा हिंसक पशु भी कुछ नर्म होता है। सिखाने और समझाने से शेर हरकसों में काम करता है और कहना मानता है पर जंगली भैंसा किसी सरकस में काम करते नहीं देखा गया। ऊँट, बैल, घोड़े, गधे बड़े परिश्रमी और समझ जाने वाले होते हैं इनके रोम छोटे तथा मुलायम ही होते हैं।

उपरोक्त तथ्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जि
मनुष्य के सिर, शरीर तथा अन्य अंगों पर कड़े, रूखे, टेड़े, मो
तथा बड़े बाल होंगे वह क्रूर प्रकृति का कठोर कर्मी होगा
लड़ाकू, लुटेरे, निडर तथा बहादुर आदमियों के बाल ऐसे
होते हैं। नेपोलियन, सीजर, सिकन्दर के बाल कड़े और मो
थे। इसके बिपरीत चतुर, राजनीतिज्ञ, मल्लाकार, धर्मा
प्रकृति के व्यक्तियों के बाल मुलायम होते हैं। एक और भी बा
है कि कड़े बालों वाले दरिद्री और मुलायम बालों वाले ध
होंगे कारण स्पष्ट है जिद्दीपन का होना निर्धन रहने की निशा
है तथा नम्रता तथा बुद्धिमत्ता धनी बनने की आधार शिला है।

अफ्रीका के नीग्रो और योरोप के गोरों की तुल
कीजिए। अफ्रीकन छोटे तथा कड़े बालों के होते हैं उनमें बु
की न्यूनता पाई जाती है, योरोपियनों के बाल लम्बे औ
मुलायम होते हैं, नीग्रो लोगों के मुकाबिले में गोरों की बुद्धिमत्त
स्पष्टतः प्रकट है। बेशक शारीरिक बल में अफ्रीकन बढ़े च
और गोरे उनसे हेटे होते हैं, पर बुद्धि के मामले में इस
बिलकुल ही उलटी बात है। इन बातों पर विचार करते हु
हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि मुलायम चिकने और कोम
बाल मानसिक उन्नति, विचार शीलता तथा चतुरता प्रकट करते
हैं और कड़े, मोटे, खुरखुरे, कँटीले बालों से शूरता, अकड़,
झगड़ा तथा बौद्धिक निर्बलता प्रकट होती है।

काले रंग का रासायनिक विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ
है कि उसमें लोहे का अंश अधिक होता है। स्याह काले बा
उस मनुष्य के होंगे जिसके रक्त में लौह की मात्रा अधिक
होगी। डाक्टर लोग बताते हैं कि रक्त में लौह की पर्याप्त मात्रा
का होना निरोगता तथा बल शालीनता का चिन्ह है। तात्पर्य
यह कि जिसके बाल स्याह काले रंग के हों उसके बलवान

निरोग और दीर्घजीवी होने की सहज ही कल्पना की जा सकती है। इसी प्रकार कितने ही आधारों से यह बात भी जानी गई है कि पतले बालों वाले कला निपुण तथा मोटे बाल वाले शारीरिक एवं मानसिक बल में बढ़े चढ़े होते हैं।

किसी पेड़ को यदि उसकी आवश्यक खुराक न मिले तो वह मुरझाने लगता है। जो लोग ज्यादा मानसिक परिश्रम करते हैं उनके सिर पर बाल कम रहते हैं, कम बढ़ते हैं या उड़ जाते हैं। कारण यह है कि बालों की जड़ों को जो खुराक प्राप्त होनी चाहिए थी वह उन्हें प्राप्त न होकर दिमागी कार्यों में खर्च हो जाती है। ऐसी दशा में खुराक की कमी के कारण सिरके बालों का कमजोर या कम होना स्वाभाविक ही है। इसलिए सिरके अगले भाग में बालों को कम देखकर यह कहा जा सकता है कि यह व्यक्ति अधिक मानसिक परिश्रम करने वाला है।

यों तो अनेक रंगों के बालों वाले लोग इस पृथ्वी पर पाये जाते हैं पर मोटे तौर से सुनहरे, कत्थई, लाल, भूरे, काले और मटमैले रंग के अधिक देखे जाते हैं। ऊपर बताया जा चुका है कि बालों का गहरा काला होना रक्त में लोह की मात्रा से सम्बन्धित है, इसी प्रकार शरीर में रहने वाले विभिन्न रसायनिक पदार्थों की न्यूनाधिकता के असर से बालों के दूसरे रंग हो जाते हैं। किन्हीं देशों की आबहवा में कोई रासायनिक पदार्थ अधिक होते हैं इसलिए वहां के निवासियों के शरीर में उन्हीं तत्वों की अधिकता हो जाती है इसलिए वहां बालों के बालों की भी एक जाति बन जाती है, इटालियन, अमेरिकन, रूसी, चीनी तथा भारतीय लोगों के बालों की तुलना की जाय तो उनमें बहुत कुछ भिन्नता मिलेगी. यह भिन्नता—उस देश की आबहवा का जो प्रभाव वहां के निवासियों पर पड़ता है—उसके कारण है।

यह तो हुई देश देश और जाति जाति के लोगों के बालों में फर्क

बात। एक देश के निवासियों में भी हर व्यक्ति में भिन्नता पाई जाती है। जिस प्रकार दो व्यक्तियों की आकृति एक सी नहीं होती वैसे ही दो व्यक्तियों के शरीर में रसायनिक पदार्थ भी एक से नहीं होते और न मानसिक स्थिति एक सी होती है। इस असमानता का प्रभाव बालों के रंग पर भी पड़ता है। जैसे रक्त में लोह की मात्रा के अनुसार बालों का कालापन होता है वैसे ही अन्य पदार्थों तथा बिचारों की स्थिति से अन्य रंग बन जाते हैं।

काले रंगके अन्तर्गत कुछ किस्में हैं जो मानसिक कारणों से बनती हैं पाठकों को उन्हें भी जान लेना चाहिए। काला बाल यदि एक दम सीधा और लम्बा हो तो समझना चाहिए कि वह व्यक्ति निराशा, दुख, चिन्ता के बिचारों में डूबा हुआ उदास रहता है। जिसके बाल लच्छेदार, घुंघराले, बलखाये हुए हों तो समझना चाहिए कि यह मन मौजी, प्रेमी स्वभाव, उपकारी, नेकी करने वाला, रोगी तथा हँसोड़ तबियत का होगा। उसका क्रोध जल्दी ही शान्त होजाता है और किसी पर कहर नहीं बरसा सकता। साधारणतः ऐसे मनुष्य पर भरोसा किया जा सकता है। जरा हलके काले रंग के बालों वाला मनुष्य चञ्चल स्वभाव, बड़े बड़े मनसूबे बांधने वाला, भावुक तथा असन्तोषी होता है। अपने को अभागा और दुखी कल्पना किया करता है यदि यह हलके काले रंग के बाल किसी गौर बदन व्यक्ति के शिर पर हों तो समझना चाहिए कि इसकी स्थिरता का कुछ भरोसा नहीं अभी इस पर जमा हुआ है तो कल किसी के बहकावे में आकर दूसरी तरफ ढुलक सकता है। इस रंग के बाल यदि मुलायम पतले तथा छोटे हों तो विनोदी प्रकृति तथा खुश मिजाजी के सूचक हैं, वे स्त्री तथा बच्चों में बहुत जल्द मिल जाते हैं, विनम्र परोपकारी, पस्त हिम्मत, खुशामदी स्वभाव के सूचक हैं। यदि

हलके काले बाल कड़े और मोटे हों तो लापरवाही, अक्खड़पन, दूसरों की अपेक्षा, स्वतंत्र प्रकृति तथा एकाकीपन पसंद करने की सूचना देते हैं।

ब्राउन रंग जिनमें लालिया की प्रधानता होती है, ज्योतिष के मत से मंगल ग्रह की विशेषता है। यह रंग बहादुरी. हिम्मत दृढ़ता तथा अहंकार का सूचक है। ब्राउन रंग के बालों वाले अक्सर दूसरों के साथ घमंड अविश्वास और तिरष्कार जनक व्यवहार करते हुए देखे जाते हैं। सामान्यतः यह रंग पशुवृत्ति का सूचक है जो भले बुरे जिस भी मार्ग पर लगजाय उसी में मजबूती के साथ बढ़ती चली जाती है। इन बालों में लच्छेदार, सीधे मोटे, पतले, कड़े, मुलायम आदि भेदों का भी वैसा ही फल समझना चाहिए जैसा कि पीछे काले बालों की चर्चा करते हुए बताया जा चुका है।

बिलकुल सुनहले बाला मृदुलता विलास और खुश मिजाजी का चिन्ह है। ऐसे बालों वाले कोई बड़ा काम नहीं कर सकते, किसी संघर्स में विजय भी कम ही प्राप्त करते हैं फिर भी उनका विनोदी स्वभाव आकर्षक होता है। यदि सुनहरीपन में कुछ कालापन तथा लालिमा मिली हुई हो वो यह मनोबल का सूचक है, ऐसे लोगों की बुद्धि तीव्र होती है और मानसिक शक्तियों का विकाश विशेष मात्रा में हुआ देखा जाता है। उसमें लिखने, बोलने कल्पना करने, निर्माण करने तथा प्रभाव डालने की शक्ति अधिक देखी जाती है।

बिलकुल लाल रंग के बाल कम ही दीख पड़ते हैं पर जब दीख पड़ें तो समझना चाहिए कि इस व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क में गर्मी की मात्रा अधिक हैं। चञ्चलता, क्रोध झगड़ालू-पन तथा बदला लेने की व्यग्रता उनमें अधिक पाई जायगी, जो

काम करेंगे बड़े उत्साह, लगन तथा जां फिसानी से करेंगे,

जिसके पीछे पड़ेंगे उसका पीछा आसानी से न छोड़ेंगे। जरा सी बात में उत्तेजित होजाना, कल्पना जगत में भावुकता के साथ विचरण करते रहना ऐसे लोगों का स्वभाव सा बन जाता है।

कभी कभी इस तरह के बाल देखने में आते हैं जो किसी खास रंग के नहीं होते, उन्हें न तो काला, कहा जा सकता है न लाल और न सुनहरी। वरन् वे कई रंगों के मिश्रण से बने होते हैं, कालापन, लालिमा तथा सुनहरीपन की मात्राओं का न्यूनाधिक मिश्रण होने से दर्जनों किस्म के रङ्ग बन सकते हैं, बालों के रङ्ग भी इसी आधार पर दर्जनों तरह के होते हैं और हो सकते हैं। आकृति विद्या का अभ्यास करने वालों को वह अनुभव प्राप्त करना चाहिए कि बालों का रग देखकर यह अदाज लगा सकें कि इनमें किस रंग का कम और किस का अधिक मिश्रण हुआ है। जिस रंग का जो गुण है वह मिश्रण में भी अपनी मात्रा के अनुसार गुण प्रकट करेगा। जैसे काले रंग में थोडा लाल रंग मिला हो तो उस व्यक्ति में काले रंग के गुण अधिक होंगे साथ ही थोडा बहुत लाल रंग का भी प्रभाव दिखाई देगा। साथ ही मोटे, पतले, छोटे लम्बे, कड़े मुलायम, तथा लच्छेदार बालों की जो विशेषता होती है उसका भी समावेश पाया जायगा। इस तरह इन सभी बातों की विवेचना करते हुए, हर व्यक्ति के सम्बन्ध में अलग अलग मत निश्चित करन पड़ेगा। इस विद्या के अभ्यासियों को पुस्तक के आधार पर प्राप्त हुए ज्ञान का उपयोग स्वतन्त्र बुद्धि से करना होता है, जैसे कि डाक्टर लोग हर रोगी की विविध मांगों से परीक्षा करके उसकी बीमारी का केवल पुस्तक के आधार पर नहीं वरन बुद्धि पूर्वक निर्णय करते हैं।

बालों के कड़े और मुलायम होने का भेद महत्व पूर्ण है,

एक बार फिर उसे दुहरा देना हम अनुचित नहीं समझते। पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि तार से कड़े बाल कठोरता, मर्दानगी, आत्म विश्वास, बल, दृढ़ता तथा अहंकार के सूचक हैं ऐसे व्यक्तियों में कला, प्रेम, ममता, सहानुभूति प्रभृति कोमल गुणों की कमी होती है। इसके विपरीत मुलायम बालों वाले भावुक, मृदुल, कल्पना प्रिय, डरपोक, उपकारी, धार्मिक, दयालु, शान्ति प्रिय स्वभाव के होते हैं।

❀ नेत्र ❀

इंग्रेजी भाषा में एक कहावत है कि "नेत्र अन्तःकरण के झरोखे हैं।" तात्पर्य यह कि आंखों में झांक कर मनुष्य की आन्तरिक स्थिति का परिचय आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। निस्सन्देह यह उक्ति बहुत ही तथ्य पूर्ण है। नेत्रों के द्वारा आन्तरिक स्थिति का जितना परिचय प्राप्त किया जा सकता है उतना अन्य किसी अंग से नहीं किया जा सकता।

पहले यहां पुतलियों के रंगों पर विचार कर रहे हैं। आमतौर से काली, लाल, नीली, पीली और नारंगी रंग की पुतलियां देखी जाती हैं। इन रंगों के मिश्रण तथा हलके गाढ़े के भेद से अनेक रंग बनते हैं। उन सब मिश्रणों के बारे में वर्णन करना कठिन है, प्रधान रंगों के बारे में जानकारी होजाने पर उनके मिश्रण और मात्रा का विश्लेषण करके पहचान करना अभ्यासियों को कुशाग्र बुद्धि पर निर्भर है। संक्षेप में प्रधान रंगों के बारे में ही कुछ चर्चा करना इन पृष्ठों में हमारे लिए सम्भव है।

नीली पुतलियों वाले कोमल स्वभाव के होते हैं। स्याह

काली पुतलियां कठोरता फुर्ती और ताक़त का चिन्ह है। व्यापार कुशलता और बुद्धिमानी भी ऐसे लोगों में अधिक देखी जाती है। गाढ़ा नीला रंग विश्वासनीय होने की सूचना है पर ऐसे लोगों में चतुरता प्रायः कम ही होती है। हलके नीले रंग से प्रगट होता है कि स्थिरता, बिचार शीलता, धैर्य और मधुरता की मात्रा अधिक होनी चाहिए। आमतौर से सभी हलके रंग चालाकी और बेईमानी प्रगट करते हैं पर यह बात नीले रंग पर लागू नहीं होती, हलके नीले रंग की पुतलियों वाले व्यक्ति अक्सर अच्छे स्वभाव के पाये जाते हैं।

बाइबिल में शैतान की आंखों को हरी बताया गया है। ऐसी पुतलियां बाले दुराचार अविश्वास, स्वार्थ और विश्वास-घात की आदतों में लिप्त पाये जाते हैं किन्तु यदि साथ ही भूरी फुटकियां भी हों तो यह हरापन सुशीलता, सच्चरित्रता विद्वता और विश्वासनीय का चिन्ह है। अगर ऐसी आंखों में किसी अन्य रंग की फुटकियां हों तो प्रतिभा, प्रसन्नता, परोपकार, कुशलता एवं कला प्रियता की अधिक होगी। पीली या नारंगी रंग की पुतलियां बहुत कम देखी जाती हैं फिर भी इस तरह की आंखें चञ्चलता, भावुकता, कवित्व, किफायतशाली, स्वार्थ-परता तथा असहिष्णुता की निशानी कही जा सकती हैं। ब्राउन-भूरा-थोड़ी लालिमा लिये हुए पुतलियां बहुत की उत्तम हैं, ऐसे व्यक्ति प्रेमी, बात के धनी, चतुर तथा गम्भीर होते हैं, ईमानदारी और व्यवहार की सचाई उनकी विशेषता होती है फिर भी उनमें दो कमजोरियां देखी जाती हैं एक जरासी बात पर नाराज होजाना दूसरा लम्पटता की ओर झुक पड़ना।

हलका काला रंग छल, कपट, बनावट, ढोंग तथा धूर्तता का चिन्ह है किन्तु गाढ़ा काला रंग स्थिरता और समझदारी प्रगट करता है। काले रंग के साथ यदि थोड़ी लालिमा मिली

हुई हो तो सदाचारी एवं सद्गुणी होने की निशानी है। बिल्ली की सी कञ्जी आंखों वाले अक्सर बिल्ली के स्वभाव के होते हैं बाहर से बहुत सीधे दिखाई देते हैं पर मौका पड़ने पर करारी चोट करने में नहीं चूकते।

अब इस बात पर विचार करना चाहिए कि कौन मनुष्य किस तरीके से देखता भालता है। साफ, खुलासा और निधड़क दृष्टि से देखने वाले व्यक्तियों का चरित्र ऐसा होता है जिसपर आप विश्वास कर सकते हैं। जिन लोगों की दृष्टि चञ्चल होती है, चारों ओर चपलता पूर्वक नजर दौड़ाते हैं वे अक्सर लोभी, चोर, भिक्षुक या कपटी पाये जाते हैं। आंख मिलाते ही झेंप जाने वालों के मनमें कुछ और तथा मुँह पर कुछ और होता है। जिसकी आंखें नीची रहती हैं वह अपराधी मनोवृत्ति का, डर-पोक या कमजोर होता है। ढीढता पूर्वक आंखों से आंखें लड़ाने वालों में उजड्डता, बेवकूफी, ऐंठ ज्यादा होगी। तिरछी नजर से देखने वाले निष्ठुर, क्रूर, तोताचस्म और झगड़ालू होते हैं।

आंखों के ढले यदि कुछ आगे उभरे हुए हों तो इसे विद्या प्रेम और ज्ञान सम्पादन का चिन्ह समझना चाहिए ऐसे लोगों की स्मरण शक्ति अच्छी होती है। साफ और खुलासा आंखों वाले व्यापार कुशल, व्यवहार पटु, परिश्रमी तथा बड़ी लगन वाले होते हैं। अधिक बड़ी आंखें तेजस्विता, सत्ता, वैभव ऐश्वर्य तथा भोग विलास से सम्पन्न व्यक्तियों की होती हैं। किन्तु परस्त्री गमन से इस प्रकार के लोग बहुत ही कम बच पाते हैं। बड़ी आंखों के बीच का फासला थोड़ा हो तो सुस्ती, चालाकी तथा ठगी की बोधक हैं और यदि उनके बीच का फासला ज्यादा हो तो सादगी, सिधाई एवं स्पष्ट वादिता का लक्षण जानना चाहिए छोटी आंखें खिलाड़ीपन, लापरवाही और सुस्ती प्रकट करती हैं। गड्ढे में धँसी आंखों वाले ऐसे दुर्गुणों

से ग्रस्त होते हैं जिनके कारण जीवन में कोई कहने लायक उन्नति नहीं पाती। चिमचिमी आंखों वाले न तो दूसरों के ऊपर अहसान कर सकते हैं और न किसी के अहसान के प्रति कृतज्ञ होते हैं।

पलक और पलकों के बाल-बिरोनी-से भी व्यक्तित्व का कुछ परिचय प्राप्त होता है। बिरौनी के बाल कम हों तो उनसे डरपोकपन प्रकट होता है, घनी बिरोनी वाले धनवान, गहरे रंग की कड़ापन लिए बिरोनी वाले शूरवीर, कोमल तथा फीके रंग वाली बिरोनी के आकर्षक स्वभाव के होते हैं। मोटे पलकों वाले विद्वान, विचारवान तथा पतले पलकों वाले स्वस्थ एव तेजस्वी देखे जाते हैं। तपस्वी और साधु वृत्ति के लोगों के बड़े बड़े पलक होते हैं, बहुत छोटे पलकों से चटोरपन, लालच, अतृप्तता तथा बेचैनी जानी जाती है।

जिसकी एक आंख एक तरह की और दूसरी दूसरे तरह की हो, ऐसा मालुम पड़ता हो कि एक आंख किसी दूसरे की निकाल कर फिट की गई हैं, ऐसे आदमी प्रायः अध पगले, बेसमझ, औंधी खोपड़ी के होते हैं। दृष्टि की कमजोरी तथा तीक्ष्णता इस बात पर निर्भर है कि नेत्रों का कैसा उपयोग किया जाता है, फिर भी इतनी बात तो है ही कि नीली आंखें सबसे कमजोर और जरा लाल रंग मिली हुई काली आंखें सबसे बलवान होती हैं। आंखों में काले काले तिल जैसे निशान होना आत्मबल की दृढ़ता का चिन्ह है यह तिल दो चार और छोटे ही हों वो अच्छे हों किन्तु यदि बड़े बड़े बहुत से तिल हों तो वे ऐसी कमजोरियों के सूचक हैं जिनके कारण मनुष्य को दरिद्रता का दुख भोगना पड़ता है। जिनकी पुतलियां फिरती हैं ऐसे भैंडे आदमी जिद्दी, बेसमझ किन्तु बहादुर होते हैं।

❀ भौंहें ❀

सिर के बालों की भांति भौंहों के बाल भी मानव स्वभाव की बड़ी खरी कहानी कह देते हैं। आकृति विद्या के अभ्यासियों को भौंहों की परीक्षा करते समय निम्न बतों पर विचार करना चाहिए। (१) गोलाई (२) लम्बाई (३) मोटाई (४) बालों की बनावट (५) आदि स्थान (६) अन्त स्थान। आगे इन सब बातों पर संक्षेपतः प्रकाश डाला जायगा।

ध्यान पूर्वक देखिए कि भौं का आरम्भ किस प्रकार होता है। यदि दोनों भवें आपस में मिली हुई हों दोनों का आरम्भ बिलकुल सटकर होता हो तो ऐसे व्यक्ति से सावधान रहने की जरूरत है। पुराने जमाने के सामुद्रिक शास्त्री कहा करते थे कि ऐसे व्यक्ति का कभी विश्वास न करना चाहिए, पर आपको इतना आगे जाने की जरूरत नहीं है। सटी भौंहों को देखकर इतना समझना ही पर्याप्त है कि इस व्यक्ति का दिल व दिमाग साफ नहीं है। ढिलमिल यकीन, संशयात्मक प्रकृति, चरित्र की कमजोरी तथा अन्य त्रुटियां ऐसे व्यक्तियों में देखी जाती हैं। वचन पलट देने तथा कर्तव्य की अवहेलना कर देने के दोष से भी वे मुक्त नहीं होते। ऐसे लोगों के बारे में यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि इनके साथ सावधानी से व्यवहार किया जाय जिन भौंहों का आरम्भ एक दूसरे से हटकर होता है वे सिधाई, सरलता तथा प्रामाणिकता प्रकट करती हैं।

कवियों के भौंहों की सुन्दरता का वर्णन करते हुए उनकी उपमा तलवार से दी है। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि तलवार की बनावट की भौंहें प्रशंसा के योग्य समझी गई हैं। कमान या तलवार की तरह घूमी हुई, बांकी, तिरछी और

पतली भौंहें प्रेमी स्वभाव, सरल प्रकृति, मधुरता तथा कला प्रियता की निशानी हैं। परन्तु आंख और भौंहों के बीच में अधिक अन्तर न होना चाहिए यदि यह अन्तर ज्यादा होगा तो चरित्र की शिथिलता और मानसिक दुर्बलता का कारण होगा। ऐसे लोग अल्प बुद्धि और व्यवहार में अकुशल होते हैं। यदि भौंहें लकीर की तरह सीधी और बहुत नीची—आंखों के बिलकुल पास हों तो उनसे कठोरता, मजबूती तथा स्वाभिमान का कारण होती हैं।

कुछ व्यक्तियों की भौंहें गोलाई लिये हुए प्रारम्भ होती हैं पर बीच में अधिक झुकाव लेकर एक दम आंखों की बगल से नीचे तक आजाती हैं। ऐसे व्यक्ति साफ सुथरे खूब रहते हैं, चमक दमक और फैशन उन्हें पसन्द होती है पर मानसिक बल की उनमें कमी ही रहती है। जो भौंहें प्रारम्भ में तो सीधी लकीर की तरह चलती हैं पर अन्त में एकदम नीचे को झुक जाती हैं वे कला प्रियता प्रकट करती हैं। विचारवान्, विवेकी, दूरदर्शी, ज्ञानवान व्यक्तियों की भौंहें मोटी होती हैं। अधूरी, छिरछिरी और अस्त व्यस्त भौंहों वाले कंजूस, लोभी तथा सूम देखे जाते हैं।

टेढ़ी मेढ़ी, मोटी, गुच्छेदार भवों वाले मनुष्य, चिड़चिड़े, अस्वच्छ, लापरवाह किन्तु चतुर, बुद्धिमान और शासन करने वाले होते हैं। घनी और मोटी भौंहें मजबूती, बुद्धिमत्ता, दृढ़ता का प्रतिनिधित्व करती है किन्तु यदि वे पतली, कमजोर और थोड़े बालों वाली हों तो शारीरिक और मानसिक निर्बलता की कथा कहती हैं। बहुत छोटी भवों वाले जल्दबाज, चपल, बहुत बोलने वाले तथा कर्कश स्वभाव के देखे जाते हैं।

सिर के बालों की अपेक्षा यदि भवों का रंग हलका हो तो यह दुर्बलता एवं शक्ति हीनता की निशानी है किन्तु यदि

उनका रंग सिर के बालों की अपेक्षा गहरा हो तो समझना चाहिए कि बल की बढ़ोतरी हो रही है। जिनकी भौंहें छोटे २ बालों की होती हैं उनमें बहुत शीघ्र गहराई तक पहुँच कर वास्तविकता को समझने की योग्यता होती है किन्तु जिनके बाल अपेक्षा कृत अधिक लम्बे होते हैं, उनमें देर से समझ आती है ऐसे व्यक्तियों को ठोकरें खा खा कर जीवन में बहुत से कड़ुए अनुभव इकट्ठे करने पड़ते हैं।

❀ नाक ❀

प्राचीन समय में ग्रीक तथा भारतीय मूर्तिकारों ने मूर्ति निर्माण के लिए कुछ नियम बना रखे थे। इन नियमों के अनुसार वे नाक को इस प्रकार बनाते थे कि जितना ऊँचा माथा हो उतनी नाक की लम्बाई रहे, आंख जितनी लम्बी हो उतनी ही चौड़ी नाक की नोक रहे, जितना अन्तर दोनों भौंहों के बीच में हो उतनी ही नाक की मोटाई रहे रहे। आकृति विद्या के अनुसार यह नाप तोल बहुत ही सद्गुणी, शक्तिवान, बुद्धिमान, बलवान तथा भाग्यवान व्यक्ति की है। यदि तीन में से एक दो बातें भी मिलती हों तो समझना चाहिए यह व्यक्ति उतने अंशों में उत्तम गुण धारण किये हुए हैं।

बीच में कुछ गोलाई लिये हुए तोते की चोंच की तरह नाक कुछ उभरी हुई हो तो यह योग्यता और अधिकार प्राप्ति की सूचक है। ऐसे लोग अपनी जिम्मेदारी को भली प्रकार अनुभव करते हैं और जिस काम को पकड़ते हैं उसे अधूरा नहीं छोड़ते। नाक का मोटा होना पुरुषार्थ का चिन्ह है और पतला होना

कमजोरी का। मोटी, साथ ही बीच में उभरी हुई नाक प्रायः बहादुरों, सेनापतियों, अधिकारियों तथा अनुशासन मानने तथा मनवाने की रुचि वालों की होती है।

बड़े चहरे पर छोटी नाक या छोटे चहरे पर बड़ी नाक इस तरह का बेडौलपन चरित्र में किसी प्रकार की कमी बताता है। पतली नाक के बड़े नथुने, मोटी नाक के छोटे नथुने, चौड़ाई अधिक और लम्बाई कम, लम्बाई अधिक चौड़ाई कम इस प्रकार की बेमेल बातें भी चरित्र में किन्हीं दोषों और त्रुटियों का होना प्रकट करती हैं।

सीधी, पतली, लम्बी तथा समानाकार नाक शुद्ध चरित्र, मान मर्यादा की रक्षा, कला प्रियता तथा उत्साह की सूचक है। परन्तु पतली और लम्बी होते हुए भी यदि वह टेढ़ी, गड्ढेदार, मांस रहित तथा बेढौल हो तो खुदगर्जी, निष्ठुरता तथा रूखापन जाहिर करती है।

किसी की नाक की नोंक नीचे की ओर इस प्रकार झुकी होती है कि नासिका के छिद्रों का भीतरी भाग बिलकुल नहीं दिखाई पड़ता, किसी की नाक की नोंक कुछ ऊंची होती है जिसके नासिका के छिद्रों के भीतर का कुछ भाग दीख पड़ता है, यह दोनों ही अपने अन्दर कुछ विशेष अर्थ छिपाये होती हैं। नीचे की ओर झुकी नोंक वाली नाक, उदासीन स्वभाव आचरण हीनता, परनिन्दा में रुचि होने की सूचना देती है किन्तु ऊंची नोंक से चपटापन, विनोद प्रियता, हंसोड़पन, मनमानी करने में रुचि, चतुरता तथा व्यवहार कुशलता का होना प्रकट होता है, ऐसे लोग हर किसी को प्रिय लगाने वाले होते हैं।

चिपटी हुई नाक न तो देखने में कुछ अच्छी मालुम पड़ती है न ऐसे लोगों का स्वभाव ही कुछ उत्तम होता है। ऐसी नाक की जड़ यदि कुछ दबी हुई तो तब तो उस आदमी

को बहुत ही छोटे दर्जे का आदमी होना चाहिए। हां, यदि चिपटी नाक बिलकुल सीधी तथा समानाकार चली आवे और नथुने कुछ फूले हुए हों तो ऐसे आदमी को यशस्वी, विशिष्ट कार्यों का सम्पादन कर्ता, कलाकार तथा वाक् पटु होने की आशा की जा सकती है। चिपटी नाक के ऊपर यदि भौंहें झुकी हुई हों और माथा आगे निकल रहा हो तो यह अन्वेषक, विचार शील, शोध करने वाला तथा दूरदर्शी होने का चिन्ह समझना चाहिये।

औसत दर्जे की नाक का बीच का हिस्सा यदि मोटा हो तो विद्या में रुचि, अध्ययन, स्वाध्याय और मनन में दिलचस्पी होना जाहिर होता है। ऐसी नाक वाले पत्र लिखने की कला में बहुत निपुण होते हैं। मोटी नाक वाले धनी, गुणवान, कमाऊ तथा प्रवासी जीवन बिताने वाले होते हैं।

नाक के ऊपर वाले भाग के साथ साथ नथुनों की रचना पर भी दृष्टिपात करना चाहिए। देखा जाता है कि कुछ पिचके हुए से नथुनों वाले डरपोक और कमजोर स्वभाव के होते हैं, चौड़े और फूले हुए नथुने भावुकता तथा कामुकता की अधिकता प्रगट करते हैं और बताते हैं कि ऐसा व्यक्ति छोटी बात को बहुत बड़ी करके मानने वाला होता है। पैने तथा नुकीले नथुने वाले खुदगर्ज और घमंडी होते हैं तथा दूसरों के मामले में अपनी टांग अड़ाने में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। मोटे, भारी और अधिक मांस वाले नथुने समझदारी; ईमानदारी, वफादारी, होशियारी तथा बीमारी की अधिकता प्रकट करते हैं। ऐसे व्यक्तियों की आमदनी तथा खर्च दोनों ही बढ़े चढ़े होते हैं।

सुखी सी नाक वाले दीर्घायु होते हैं। जिसकी नाक बीच में बैठी हुई हो वह परस्त्री गामी, मधुर भाषी तथा बहुत कमाने वाले होते हैं जिसकी नाक अपने अंगुल से साढ़े तीन अंगुल

लम्बी हो यह अपने ही पुरुषार्थ से धन पैदा करता है किन्तु सन्तान की ओर से दुखी रहता है। जिसकी नाक तीन अँगुल लम्बी हो वह दीर्घायु, किन्तु साधारण चित्त वाला होगा। चार अँगुल नाक वाले मूर्ख और लड़ाका होते हैं। ढाई अँगुल नाक वाले दरिद्री होते हैं। भाग्यवानों को प्रायः एक साथ दो छींकें आती हैं।

❁ दांत ❁

आपने देखा होगा कि छोटे शिशुओं के आरम्भिक दांत जिन्हें दूध के दांत कहते हैं—प्रायः साफ स्वच्छ, एकसे, पंक्ति बद्ध और एक सीध में निकलते हैं। यह मनुष्य के स्वाभाविक दांतों का चित्र है। दुनियां में आकर बालक जिन शारीरिक और मानसिक संस्कारों को ग्रहण करता है वे धीरे धीरे जड़ जमाने लगते हैं और आठ दस वर्ष की अवस्था तक बहुत कुछ पक्के हो जाते हैं। मानव शरीर शास्त्र के आचार्यों का कहना है कि छै सात वर्ष की उम्र तक जितना ज्ञान प्राप्त किया जाता है फिर सारे जीवन में उससे कम मात्रा में ही ज्ञान सञ्चित होता है। बचपन में विभिन्न मार्गों से जो संस्कार बालक के हृदय पटल पर पड़ते हैं, उनसे शरीर और मस्तिष्क एक अदृश्य ढांचे में ढलता है। यह ढलाई दांतों को देखकर पहचानी जा सकती है। बचपन की आदतों का कुछ परिचय दांतों को देखकर प्राप्त किया जा सकता है।

साफ, सीधे, एकसे, बराबर के दांत मनुष्य की स्वाभाविक स्थिति के द्योतक है, ऐसे दांत वालों में एक भले मानस के प्रायः

सभी आवश्यक गुण पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। ऊबड़ खाबड़, टेढ़े मेढ़े असमान और कुरूप दांत बुरे स्वास्थ्य और बुरे स्वभाव की कहानी कहते हैं। लम्बे दांत बड़ी आयु वालों के, छोटे दांत बीमारों के और नुकीले दांत हिंसक पशुओं जैसे स्वभाव का होना बताते हैं।

आगे की ओर निकले हुए दांत कंजूसी, लालच, बहुत जमा करने की हविस का होना प्रकट करते हैं। दांतों का बढ़ाव जितना ही आगे की ओर होगा उतनी ही कंजूसी अधिक होगी। खर्चीले आदमियों के दांत प्रायः कभी भी इस प्रकार के नहीं पाये जाते। निकले हुए दांतों वाले यदि कुछ उदारता दिखावेंगे भी तो वह यश कमाने, बड़ा बनने, प्रायश्चित्त करने की भावना से होगी, दया द्रवित होकर यज्ञ भावना से उनकी उदारता देखने को न मिलेगी। दांतों का कुछ थोड़ा सा झुकाव भीतर की ओर हो तो यह दब्बूपन और लज्जा शीलता का चिन्ह है यदि वे जरा आगे की ओर झुक रहे हो तो दबंगपन, तेजी कठोरता और शासक वृत्ति का होना बताते हैं।

जिनके मसूड़े बहुत बड़े भारी और लटके हुए हैं समझना चाहिए यह व्यक्ति बहुत जिद्दी, कट्टर, अड़ियल, आक्रमणकारी और छीन झपट करने वाला होगा। हलके और छोटे मसूड़े वाले उदार, प्रतिज्ञा पालक, सीधे और साफ दिल के होते हैं। नीलापन लिये हुए मसूड़े स्वाभिमानी, मोहग्रस्त और रुग्ण शरीर वालों के होते हैं। जिन मसूड़ों में लालिमा अधिक हो उन्हें खुश मिजाजी, कोमलता, बुद्धिमानी और सभ्यता की अधिकता का द्योतक समझना चाहिए।

दांत और मसूड़ों की बनावट के अनुसार ही ठुड्डी की शकल बनती है। जिस ठुड्डी में गड्ढा पड़ता है वह आनन्दी और मिलनसार स्वभाव बताती है। मजबूत आदमियों की बड़ी

ठुड्डी होती है। जो बड़ी हो, चौड़ी हो मांस कम और हड्डी ज्यादा हो तो उसे धीरता, वीरता, गम्भोरता और स्थिरता का लक्षण समझना चाहिए। क्रोधी किन्तु धुन के पक्के लोगों की ठुड्डी देखने में चौकोर सी मालूम पड़ती है। रूखे, उदासीन, शान्त, निराश, स्वल्प सन्तोषी लोग चिपटी ठोड़ी के देखे जाते हैं। स्वार्थी अक्सर नुकीली ठुड्डी वाले देखे जाते हैं। आगे की ओर बहुत निकली हो तो उसे चालाकी और धूर्तता बताने वाली समझना चाहिए। मेहनती आदमी दबी हुई सी छोटी ठोड़ी वाले होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति यशस्वी और धा।मक वृत्ति के भी देखे जाते हैं। गोल ठोड़ी वालों को ऐश आराम की कमी नहीं रहती, ऐसे आदमी बहुत मित्रों वाले, धन उपार्जन करने वाले नई सूझ वाले तथा दूरदर्शी होते हैं। गोल महराब-दार ठोड़ी वाले उथले मिजाज के और छिछोरी तबियत के होते हैं। लम्बी, आगे को निकली और आगे से एक दम चिपटी ठोड़ी वाले लोग बुद्धि जीवी, पण्डित, वकील, साहित्यकार होते हैं।

❀ होठ ❀

शरीर के अन्य अङ्गों पर व्यक्ति के स्वभाव की छाया कुछ देर में पड़ती है और देर तक ठहती है। किन्तु होठों में ऐसी विशेषता है कि उनपर बहुत शीघ्र यहां तक कि उसी समय स्वभाव की छाया दृष्टिगोचर हो जाती है। रूठे हुए, सन्तुष्ट, आनन्दित, विपत्ति ग्रस्त, मनमौजी आदि मनो भावनाएं होठों पर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ती हैं। जैसे ही यह भावनाएं

बदलती हैं और उनके स्थान पर दूसरी परिस्थिति आती है वैसे ही होठों का रंग ढङ्ग भी बदल जाता है।

मध्यमवृत्ति के होठों वाला मुँह अच्छा समझा जाता है। बहुत बड़े, बहुत छोटे, बहुत मोटे, बहुत पतले यह सभी बुराई प्रदर्शित करते हैं। जो होठ भले प्रकार बन्द नहीं होते, कुछ खुले रहते हैं उनसे मनुष्य की नासमझी, बकवादीपन, अदूरदर्शिता तथा चरित्र की कमजोरी प्रकट होती है। मोटे होट बताते हैं कि इन्द्रिय सुखों को भोगने की लालसा इसे प्रबल रूप से सताया करती है। पतले होट सिधाई और सहानुभूति प्रकट करते हैं। मोटे होट वाले का यदि निचला होट ऊपर से कुछ आगे बढ़ा हुआ हो तो स्वादिष्ट भोजनों की विशेष इच्छा, दयालुता, कोमल हृदय तथा अनिश्चित स्वभाव का द्योतक है। मोटे होट यदि किवाड़ों की तरह बिलकुल भिड़कर बन्द होते हों तो हिम्मत, मोकापरस्ती और चतुरता जाहिर करते हैं ऐसे लोग मुस्तकिल मिजाज होते हैं एक बार जिस बात पर विश्वास करलें फिर उसे बदलना उनके लिए बहुत मुश्किल है। किसी के समझाने बुझाने का उन पर कोई अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। पतले होंट यदि खूब भिड़ कर बैठते हों तो कंजूसी, रूखापन, तोताचस्मी, खुदगर्जी तथा शोषक वृत्ति की सूचना देते हैं। ऐसे लोगों को प्रसन्न रहते हुए न पाया जायगा, व्यापार के मामले में वे दृढ़ होते हैं तो भी अन्य बातों में उनका इत्मीनान करना कठिन है।

नीचे के होट से ऊपर का यदि बड़ा हो कुछ आगे लटकता हो तो समझना चाहिए कि वह शुद्ध चरित्र, भलामानस, परोपकारी, विनम्र लज्जाशील तथा झेंपू होगा। उसके बहुत ही थोड़े मित्र होंगे, जो होंगे वह भी आवेगा के। अगर पतले होटों में ऊपर का बड़ा हो तो चिन्ता उदासीनता घबराहट से

प्रसिद्ध सदा अपना दुखड़ा रोने वाला तथा अनिष्टों की कल्पना करके सदा डरता रहने वाला होगा। पतले होटों में नीचे का होट यदि बड़ा हो तो विद्वत्ता, परख, हंसोड़पन, साथ ही अभिमान तथा दूसरों की निन्दा करने का स्वभाव पाया जायगा। नीचे के होट का अन्तिम सिरा यदि जरा सा मुड़ रहा हो तो उससे फैशन परस्ती, प्रतिभा, चतुरता, दार्शनिकता झलकती है ऐसे लोगों का यश दूर दूर तक फैलता है।

मुँह की दोनों बगली यदि भीतर को धँसी हुई हों तो प्रसन्नता, मजाक पसन्दगी, प्रेम तथा मधुर भाषण प्रकट करती हैं, यदि ऊपर की ओर उभरी हुई हों तो गम्भीरता, आदर भाव, सन्तोष तथा मिलनसारी का होना बताती है। एक होट के गड्ढे में दूसरे होट के फुलाव की मढ़ मिलकर दोनों होट फिट बैठते हों तो ऐसे व्यक्ति सच बोलने वाले, प्रेमी, विश्वास पात्र होते हैं परन्तु ऐसे लोगों के सामने कोई गुप्त बात प्रकट न करनी चाहिए क्योंकि उनके पेट में गुप्त भेद छिपाये रहने को जगह नहीं होती।

नीले होटों वाले क्रोध अधिक करते हैं, फीके होट परिश्रमी मनुष्यों के होते हैं, लाल होट चतुर विद्वान और धनियों के होते हैं, जिनका चित्त प्रसन्न रहता है उनके होट गीले रहते हैं, बीमार और दुखियों के होट शुष्क देखे जाते हैं, उच्च अन्तःकरण के महापुरुषों के होट अक्सर फटे, चिथड़े और खुरखुरे देखे जाते हैं।

❀ गर्दन ❀

बहुत मोटी गर्दन वाले हाथी, भैंसा, सुअर आदि जानवर अपने चारों ओर नहीं देख सकते क्योंकि बहुत मोटी गरदन को मोड़कर इधर उधर देखना कठिन होता है। इस लिए इस प्रकार के जानवर सिर्फ आगे की ही चीज देखते हैं उन्हें पीछे की ओर अगल बगल की चीजें दिखाई नहीं पड़तीं। यही स्वभाव मोटी गरदन वाले मनुष्यों में पाया जाता है वे आज की अब की बात पर तो विचार करना जानते हैं पर पीछे की बातों की अपेक्षा करते रहते हैं। ऐसे लोगों को मूर्ख भी कह सकते हैं। पतली गरदन वाले अक्सर चतुर, बुद्धिमान और आगा पीछा सोचकर काम करने वाले होते हैं। बहुत गम्भीर विषयों पर विचार करने वालों की गरदन आगे की ओर टेढ़ी हो जाती है जिससे सिर कुछ झुका हुआ सा रहा करता है। किसी भारी चिन्ता तथा सोच विचार में पड़े हुए लोगों की गरदन एक तरफ को ढुलकी हुई सी रहती है। घमडियों की गरदन तनी हुई, बहादुरों की अकड़ी हुई और हँसोड़ो की जरा पीछे की ओर झुकी रहती है।

लम्बी गरदन वाले पशु पक्षियों पर दृष्टि पात कीजिए। जिराफ, कंगारू, ऊँट, हिरन, सारस, बतक आदि दब्बू डरपोक, दूसरों के शिकार, भागने वाले, दुवले पतले होते हैं, उनमें कुछ बौद्धिक विशेषता भी नहीं पाई जाती, यही बातें लम्बी गरदन के मनुष्यों में देखी जाती हैं। मजबूत, भरी हुई, गोल, मँझोली गरदन वाले मनुष्य भारी भरकम, गम्भीर तथा तेजस्वी होते हैं जिसकी लम्बाई बहुत छोटी हो, सिर कंधों के बिलकुल पास हो ऐसे मनुष्य खोटे, दुर्व्यसनी तथा ओछी तबियत के देखे जाते हैं

जिसमें नसें और हड्डियां चमक रही हैं ऐसी गरदन वाले बीमारियों में ग्रस्त रहते हैं आये दिन उनके शरीर में कुछ व्यथा खड़ी रहता हैं।

❀ कान ❀

आकृति विद्या के आचार्यों का मत है कि मध्यम आकार के छोटे छेद वाले सुन्दर सुडौल आकार के कान बहुत शुभ हैं ऐसे व्यक्ति में वे गुण होते हैं जिनके कारण उसका जीवन बहुत आनंद पूर्वक व्यतीत होता है। लम्बे बड़े २ कानों वाला विनम्र स्वभाव, सदाचरी तथा डरपोक होता है। आपने देखा होगा कि खरगोश प्रकृति डरपोक स्वभाव वालों के कान बड़े २ होते हैं किन्तु यदि उनकी जड़ें मोटी हो तो बड़े कान होना महापुरुष, नेता तथा धर्मात्मा होने का चिन्ह है। गौतम बुद्धि तथा महात्मा गान्धी के चित्रों में हम उनके मोटी जड़ वाले बड़े २ कानों को देख सकते हैं। इसी प्रकार चूहे के से बहुत छोटे कानों को छोड़कर साधारणतः छोटे कान प्रेम, प्रीति, स्नेह, सहानुभूति के लक्षण हैं, हां यदि बहुत ही छोटे कान हों तो उन्हें छोटे दिल, छोटे दिमाग तथा छोटे हौसले का निशानी समझा जा सकता है।

पीछे की ओर सिर की बगलो से चिपके हुए कान लज्जा शीलता, संशयात्मा, तथा दब्बूपन के सूचक हैं। इठे हुए से कान कुटिलता तथा टेड़ेपन का इजहार करते हैं। हाथी के से सीधे खड़े कान हिम्मत, मजबूती, मर्दानगी बताते हैं। जिनकी जड़ें बहुत ही कमजोर हों और कान सींग की तरह शरीर से

जुवापन प्रकट करते हुए लग रहे हों तो लालच और क्रूरता की मात्रा बढ़ी चढ़ी होगी। मोटे, सीधे और ऊँचे कानों वाले बड़े विचित्र स्वभाव के होते हैं, साधारणतः वे सीधे साधे तरीके से रहते हैं पर यदि उन्हें उत्तेजित किया जाय, छेड़ा जाय या सताया जाय तो इतने भयंकर बन जाते हैं जिसका सँभालना कठिन है। उस आवेश में वे ऐसे कृत्य कर सकते हैं जिसकी उनका सीधापन देखते हुए कभी आशा नहीं की जाती थी। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के कान ऐसे ही थे, उस महलों में रहने वाली महिला ने अन्त में कैसा भयंकर रूप धारण किया था इस बात को इतिहासवेत्ता भले प्रकार जानते हैं।

कानों की जड़ यदि आंखों की सीध से ऊँची हों तो उससे स्वभाव की गर्मी प्रकट होती है, क्रोधी, खूंखार, बदला लेने वाले, झगड़ालू व्यक्तियों की कानों की जड़ें अक्सर आंखों की सीध से ऊँचे होते हैं। सामान्यतः कानों की जड़ें आंखों की सीध रहनी चाहिए, मध्यम श्रेणी के सद्‌गृहस्थ इसी प्रकार के होते है किन्तु यदि कान की जड़का ऊपरी भाग आंख के ऊपरी भाग से कुछ नीचा हो तो वह उत्तम स्वभाव, स्वस्थ शरीर और अच्छा मस्तिष्क होने का प्रमाण है।

शंख के से कान वाला समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त अगुआ होता है। जिसके कानों पर बड़े बड़े बाल हों वह बड़ी उम्र वाला होता है। छोटे मांस रहित, पतले कान वाला मनुष्य छोटे काम करने वाला होता है और दुःख दरिद्र की जिन्दगी बिताता है। बहुत नसों की भरमार जिसके कानों में चमक रही हो वह दुष्ट स्वभाव और क्रूर कर्मी होता है। सिंघाड़े की तरह जिसकी कान सकड़ कर ककड़ी बन रहा हो ऐसा व्यक्ति प्रायः अविश्वासी और दरिद्री होता है। पहलवानों पर यह बात लागू नहीं होती

क्योंकि वे लोग कुश्ती लड़ने के लिहाज से अपने आप मरोड़ मरोड़ कर कानों को इस प्रकार का बना लेते हैं।

आंखों से दूर फासले पर जिनके कान होते हैं उनकी योग्यता एवं विचार शक्ति बढ़ी चढ़ी पाई जाती है जिनके कान कनपटी के समीप हों वे उदासीन, वैरागी स्वभाव के होते हैं, कामों में उनका मन कम लगता है और एकान्त सेवन की इच्छा किया करते हैं।

कानों की परीक्षा करते समय अभ्यासियों को यह मोटी बातें याद रखनी चाहिए कि छोटे, पतले, हलके कान, ज्ञान, विद्या, बुद्धि, कोमलता तथा नम्रता के सूचक हैं। मध्यम श्रेणी के कान स्वस्थता तथा आनन्द प्रियता के चिन्ह हैं और बड़े झम्झड़ लाल और कठफूला से कान कुछ विशेष अपवादों को छोड़कर मोटे स्थूल और हलके दर्जे के स्वभाव के लक्षण हैं।

❀ मस्तक ❀

मस्तक की मजबूत हड्डियों के अन्दर अत्यन्त कोमल भूरे रङ्ग का चिकना चिकना पदार्थ भरा हुआ है जिसे मस्तिष्क कहते हैं। मस्तिष्क में असंख्य मानसिक शक्तियों का निवास है, इन शक्तियों के पृथक पृथक स्थान हैं जिनका विस्तार पूर्वक वर्णन हम अपनी 'बुद्धि बढ़ाने के उपाय' पुस्तक में कर चुके हैं। यहां संक्षेपतः सार रूप में इतना ही बता देना पर्याप्त होगा कि सिर के अगले भाग यानी माथे की तरफ आशा, धर्म दृढ़ता, इज्जत, बुद्धि तथा विवेक आदि आत्मिक शक्तियों का स्थान है। सिर के पिछले भाग में लालच, लड़ाई, मोह, काम वासना आदि

सांसारिक भावनाऐं रहती हैं। सिरकी दोनों बगलियों में गाना, बजाना, नृत्य, चित्रकारी, कवित्व, रचना, विज्ञान तथा कला प्रभृति कोमल वृत्तियों का निवास है। सिरके इन तीनों भागों में जो मजबूत, पुष्ट, स्वस्थ तथा उन्नत दिखाई पड़ता हो समझना चाहिए कि उस स्थान में रहने वाली शक्तियां भी बढ़ी चढ़ी होंगी।

ऊँचे और चौड़े माथे को देखकर विचार शीलता तथा बुद्धिमत्ता का अनुमान किया जा सकता है। छोटा, दबा हुआ, कम चौड़ा माथा अल्पबुद्धि और विवेक हीनता का लक्षण है, उभरे हुए और चमकदार माथे वालों की स्मरण शक्ति तेज होती है तथा विद्याभ्यास का शौक बढ़ा चढ़ा होता है। कम ऊँचा माथा यदि लम्बाई में दूर तक फैला हुआ हो तो हाजिर जवाब, चतुर, गहराई तक पहुँचने तथा कुशाग्र बुद्धि का सूचक होते हैं। ऊँचा और चौड़े मस्तक वाले व्यक्तियों को यदि अवसर मिले तो वे महापुरुष, नेता और आदर्श व्यक्ति हो सकते हैं इनमें परिश्रम, चतुरता, बुद्धिमत्ता और सचाई की काफी मात्रा होती है। जड़ में अर्थात् भौंहों के पास माथा आगे की ओर बढ़ा हुआ हो और ऊपर बालों के पास पीछे को हटा हुआ हो तो समझना चाहिए कि सद्भावना और सच्चरित्रता की कमी है। नीचे ऊपर धँसा हुआ और बीच में उभरा हुआ माथा सहानुभूति गम्भीरता और उदारता का लक्षण है। ऊपर का भाग आगे निकला हुआ और नीचे का भाग भीतर धँसा हुआ हो तो वह व्यक्ति शौकीन तबियत का, यात्रा करने वाला तथा नित नई योजनाऐं बनाने वाला होगा।

गोलाई लिये हुए माथा कृपालुता, आदर, अनुराग तथा धार्मिकता प्रकट करता है। महराबदार अर्थात् बीच में नुकीला

और दोनों ओर गोल माथा दार्शनिक, विचारक, विद्वान और नई बातें खोजने वालों का होता है। सीधे सपाट माथे वाले बेफिक्र, मस्तराम, हर हालत में खुश और चैन की बंशी बजाने वाले होते हैं, उन्हें दीन दुनियां की ज्यादा परवाह नहीं रहती। भवों के ठीक ऊपर माथे की हड्डियां यदि कुछ आगे बढ़ी हुई हों तो इससे उत्साह, जोश और लगन का चिन्ह समझना चाहिए। देश और जाति की महत्व पूर्ण सेवा करने वालों के माथे के बीच में अक्सर गड्ढे देखे जाते हैं। अगर दोनों भवों के बीच में गड्ढा हो तो इसे वाक्पटुता, प्रसन्नता, चतुराई तथा दयालुता का द्योतक समझना चाहिए।

फूला हुआ, भारी सा, अधिक वजनदार मस्तक, ठस्स बुद्धि और अड़ियल स्वभाव वालों का होता है। लम्बाई में बहुत छोटा किन्तु ऊँचा बहुत हो तो कपटीपन, ढोंग और मिथ्या भाषण की भरमार समझनी चाहिए। चौकोर माथा प्रतिभा, स्थिरता, सचाई और दृढ़ता प्रकट करता है। व्यापारी और धनी लोगों के माथे में एक प्रकार की चमक रहती है। ऊबड़ खाबड़, बेडौल, मस्तक अस्थिरता और काहिली का भेद खोलते हैं।

सिर का पिछला हिस्सा यदि भरा हुआ हो तो प्रेमी होने का और चिपटा हो तो स्वार्थी होने का लक्षण है। यह भाग यदि गड्ढेदार, सूखा हुआ, पोला पोला हो तो चिड़चिड़ेपन तथा खुदगर्जी की अधिकता बताता है। ठोस, चौड़ा, सीधा हो तो इन्द्रियों पर काबू रखने वाला होना चाहिए। छिपटी सा पतला और उभरी हुई नसों का हो तो दुनियांदारी के धन्धे में बहुत अधिक व्यस्त समझना चाहिए। साधु और त्यागी वृत्ति के लोगों के सिर के पिछले भाग को टटोलने पर एक छोटा सा गड्ढा मालूम पड़ा करता है।

छोटी कनपटी वाले नीरस स्वभाव के होते हैं। बड़ी, चौड़ी या फैली हुई कनपटी रसीली प्रकृति के संगीत, साहित्य तथा कला कौशल में रुचि लेने वालों की होती है। कनपटी के नीचे नाक की तरफ़ जाने वाली जबड़े की हड्डी यदि उभरी हुई हो तो उससे शारीरिक अस्वस्थता प्रकट होती है। कान के पीछे यदि हड्डियों के दो गुटके से उभरे हुए हों तो उस व्यक्ति को कूट नीतिज्ञ, रहस्यमय तथा गहरे स्वभाव का समझना चाहिए।

अब एक दृष्टि में सिर के तीनों भागों को मिलाकर देखिए। यदि 'दो मूँड, वाला सिर हो ऐसा मालूम पड़े कि एक साथ दो सिर जोड़ दिये गये हैं तो ऐसे मनुष्यों को दुगुणी तथा दरिद्रता का कष्ट पाने वाला समझना चाहिए। जिसके माथे में कूबड़ से उठे हुए होते हैं ऐसे मनुष्य अपनी कम अकली से सदा दुख पाते रहते हैं। चपटे सिर वाले व्यभिचारी तथा आदरणीय पुरुषों की अविज्ञा करने वाले होते हैं। बहुत छोटे सिर वाले चञ्चल और चालाक तो खूब होते हैं पर विद्वत्ता तथा गम्भीरता की न्यूनता ही रहती है। मध्यम आकार का सुडौल सिर धनी, विद्यावान् सुखी और सदाचारी लोगों का होता है। जिसके माथे पर रामानन्दी तिलक का सा चिन्ह हो वह बड़ा होनहार, धनी, पुरुषार्थी तथा यशस्वी होता है।

सामुद्रिक शास्त्रों में ऐसा भी वर्णन मिलता है कि स्वच्छ चिकने, चमकदार, किनारों पर जरा सी सुर्खी लिये हुए नेत्र धनवानों के होते हैं। जिनके सफेद भाग में थोड़ी नीली झलक होती है वे असाधारण बुद्धिमान होते हैं। क्रोधी मनुष्योंके नेत्रों में सुर्खी की मात्रा अधिक रहती है। कबूतर के से गोल नेत्रों वालों में काम वासना अधिक होती है। नशीली आंखों से नेकी और सदाचार प्रकट होता है। सामने की ओर कुछ नीची दृष्टि

करके चलने वालों का मन पवित्र होता है। पुण्यमान और धर्मात्मा लोग कुछ ऊँची दृष्टि करके चलते हैं। क्रोधी मनुष्य तिरछे देखते हैं। नजर बचाकर चलने वाले चोर अपराधी या पतित स्वभाव के होते हैं। काने में कुछ दुर्गुण अवश्य पाये जायगे। अंधे आदमियों की मानसिक शक्तियां अधिक विकसित होती हैं। बड़ी आंखों को मिचमिचा कर देखने वाला कपटी और छोटी आंखों को खूब खोलकर देखने वाला आत्मविश्वासी तथा दृढ़ प्रतिज्ञ होता है। जो बात करते समय बार बार पलक मिचकाता है वह बगुला भगत के स्वभाव का होता है।

❁ रहन सहन ❁

जोर जोर से कदम पटक कर सड़क पर खटपट करता हुआ चलने वाला मनुष्य अभिमानी, चुस्त और फुर्तीला होता है। पैरों को हाथी की तरह गाड़ २ कर चलने वाले स्वाव-लम्बी, शान्त स्वभाव, धैर्यवान और न्याय प्रिय होते हैं, अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिए ऐसे लोग बड़ी २ आपत्तियों का मुकाबिला भी खुशी २ करते हैं। रास्ता चलते समय दो आदमियों की जगह घेरने वाले, ऐसे लोग जो हाथों को इधर उधर हिलाते चलते हैं, हिलते और झूमते हुए आगे बढ़ते हैं, दूसरों के लिए रास्ता नही छोड़ते पर अपने सामने आने वाले को हटा देते हैं इस प्रकार के लोग बदमिजाज, घमंडी, अन्यायी, पर पीड़क और शैतानी नशे में मस्त होते हैं। कमर झुकाकर और कन्धों को आगे लटकाकर चलने वाले कमजोर और निराश देखे जाते हैं।

सांप की तरह टेढ़ी मेढ़ी रीढ़ वाले विश्वासघाती, धोखे-

बाज और बेईमान होते हैं। उनकी मीठी बातों के पीछे कपट म पुट लगा रहता है।

जो बहुत अकड़ कर बातें करता है, जरा २ सी बात में लाल पीला हो जाता है, हाथ पटकने और गरजने लगता है ऐसे मनुष्य को 'मिट्टी के शेर,, से अधिक और कुछ नहीं समझना चाहिए। एक लताड़ में उनकी सारी हेकड़ी काफूर हो जाती है। परले सिरे के कायर और बुजदिल आदमी इस तरह की अकड़-बाजी दिखाते हैं वे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते। बहादुर और खूंखार आदमी देर में गरम होते हैं और जब गरम होते हैं तो कुछ करके दिखाये बिना चुप नहीं होते।

जिनके पैर छितराये हुए शराबियों की तरह इधर उधर पड़ते हैं और चलने में पैर एक दूसरे से लड़ते जाते हैं ऐसे लोग आलसी, असफल और अन्ध विश्वासी होते हैं।

जिनके कपड़े मैले, फटे, बेतरतीब तथा बिखरे हुए हों उन्हें सुस्त, काहिल, लापरवाह और आत्म गौरव से रहित समझा जा सकता है किन्तु स्वाभिमानी और स्वच्छ तबियत वाले गरीब होने पर भी तरतीब और सफाई के साथ कपड़े पहनेंगे भले ही वे सस्ते या फट जाने पर मरम्मत किये हुए हों।

बिखरे हुए बाल, मैले हाथ बढ़े हुए बाल, पीले दांत, टूटे बटन, फटे जूते, बढ़े हुए नाखून, जहां तहां लगे हुए दाग प्रकट करते हैं इस व्यक्ति की आदतें ऐसी हैं जो दरिद्रता के दुख में धकेल कर छोड़ेंगी। लापरवाह लोग धन नहीं कमा सकते और न उसकी रक्षा ही कर सकते हैं।

❀ कुछ आवश्यक बातें ❀

यह बिलकुल स्पष्ट है कि मनुष्य की जैसी शारीरिक एवं मानसिक अन्तरङ्ग अवस्था होती है उसी के अनुसार आकृति का निर्माण होता है। सामुद्रिक शास्त्र साक्षी है कि यदि शरीर और मनकी दशा अस्वस्थ होगी तो चहरे पर ऐसे चिन्ह प्रकट होंगे, जो देखने में बुरे लगते हैं, खटकते हैं, कुरूप मालूम पड़ते हैं और अनायास ही एक प्रकार का भय, आतंक तथा सन्देह उत्पन्न करते हैं। बकरी के बच्चे ने अपने छोटे से जीवन में पहले कभी भेड़िये का दर्शन भले न किया हो और न किसी ने उसे भेड़िये के स्वभाव के बारे में कुछ बताया हो, तो भी वह भेड़िये के प्रथम बार दर्शन करते ही क्षण भर में यह जान लेता है कि भेड़िया किस प्रकार के स्वभाव का है और वह मेरे ऊपर क्या कहर बरसा सकता है। बकरी के बच्चे को पलभर की देर नहीं लगती एक दृष्टि में ही वह सब कुछ ताड़ लेता है और अपने प्राण बचाने की फिक्र करता है। प्रकृति ने यह सहज ज्ञान मनुष्यों को भी दे रखा है ताकि किसी के सम्पर्क में जाते ही यह जान लिया करें कि सामने वाले व्यक्ति में क्या भले बुरे गुण हैं और उनसे क्या हानि लाभ हो सकता है।

बहुत से लोगों के चहरों को ध्यान पूर्वक देखिए, आपके मन पर इस दृष्टिपात का कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ेगा। विभिन्न व्यक्तियों के चहरों को देखकर घृणा, क्रोध, भय, आशङ्का अविश्वास, घबराहट तथा प्रेम, सहानुभूति आकर्षण, श्रद्धा, विश्वास आदि विभिन्न भाव उत्पन्न होते हैं। कारण यह है कि उन व्यक्तियों के भीतर जैसे गुण दोष भरे हुए हैं वे चहरे पर झलक रहे हैं, दृष्टिपात करने के उपरान्त आपने पुस्तक की

भांति पढ़ लिया और सारी बात समझ गये। चहरा पक्का चुगलखोर है वह सारे गुप्त प्रकट भेदों को हर किसी के सामने प्रकट करते रहने की आदत से कभी बाज नहीं आता।

पाठकों को याद रखना चाहिए कि वे अपने अन्दर दोष, दुर्गुण, पाप और कुविचारों को जितना ही स्थान देंगे, उतनी ही उनकी आकृति, कुरूप, डरावनी, अविश्वसनीय होती जायगी। यहां कोई चालाकी काम न देगा। पाउडर, क्रीम, वेसलीन, उबटन, सजाव, श्रृङ्गार का बनावटी पर्दा बिलकुल कारगर न होगा। अंगों की रूप रेखा सब कुछ कह ही देगी। किन्तु यदि अपने अन्दर सत्य, प्रेम, न्याय, उदारता, नेकी, संयम आदि सद्गुणों और सद्भावनाओं को स्थापित करेंगे, तो दिन दिन उसके सौन्दर्य की वृद्धि होती जायगी, मुख मण्डल पर ऐसी झुकान होगी जो दूसरों पर बहुत ही उत्तम प्रभाव डालेगी। अपने जो सुन्दर बनाने के लिए अपने सौन्दर्य की वृद्धि करने के लिए जो लालायित हैं उनके लिए ठोस प्रामाणिक, विश्वासनीय और अनुभूत उपाय यह है कि अपने दुर्गुणों को दूर करके सद्भावनाओं को अधिकाधिक मात्रा में अपनाने का प्रयत्न करें। इससे निश्चय ही चहरे की सुन्दरता और सुडौलता में वृद्धि होगी। आकृति विद्या इस बात का पूरी शक्ति के साथ समर्थन करती है।

इन सब बातों पर विचार करते हुए आकृति विद्या के अभ्यासियों को किसी ठीक निर्णय पर पहुँचने के लिये गंभीरता पूर्वक देख भाल करने की आवश्यकता है। जन्म जात स्थिर लक्षणों से पुराने और बारीक संस्कारों का ही पता चलता है, इसलिए किसी कुरूप को देखकर बुरा होने और सुन्दर को

देखकर अच्छा होने का फैसला न कर लेना चाहिए वरन् उसके अस्थायी लक्षणों का, हाव भाव, दृष्टि, होटों का भाव, चाल

भांति पढ़ लिया और सारी बात समझ गये। चहरा पक्का चुगलखोर है वह सारे गुप्त प्रकट भेदों को हर किसी के सामने प्रकट करते रहने की आदत से कभी बाज नहीं आता।

पाठकों को याद रखना चाहिए कि वे अपने अन्दर दोष, दुर्गुण, पाप और कुविचारों को जितना ही स्थान देंगे, उतनी ही उनकी आकृति, कुरूप, डरावनी, अविश्वसनीय होती जायगी। यहां कोई चालाकी काम न देगा। पाउडर, क्रीम, वेसलीन, उबटन, सजाव, श्रृङ्गार का बनावटी पर्दा बिलकुल कारगर न होगा। अंगों की रूप रेखा सब कुछ कह ही देगी। किन्तु यदि अपने अन्दर सत्य, प्रेम, न्याय, उदारता, नेकी, संयम आदि सद्गुणों और सद्भावनाओं को स्थापित करेंगे, तो दिन दिन उसके सौन्दर्य की वृद्धि होती जायगी, मुख मण्डल पर ऐसी मुस्कान होगी जो दूसरों पर बहुत ही उत्तम प्रभाव डालेगी। अपने को सुन्दर बनाने के लिए अपने सौन्दर्य की वृद्धि करने के लिए जो लालायित हैं उनके लिए ठोस प्रामाणिक, विश्वासनीय और अनुभूत उपाय यह है कि अपने दुर्गुणों को दूर करके सद्भावनाओं को अधिकाधिक मात्रा में अपनाने का प्रयत्न करें। इससे निश्चय ही चहरे की सुन्दरता और सुडौलता में वृद्धि होगी। आकृति विद्या इस बात का पूरी शक्ति के साथ समर्थन करती है।

इन सब बातों पर विचार करते हुए आकृति विद्या के अभ्यासियों को किसी ठीक निर्णय पर पहुँचने के लिये गंभीरता पूर्वक देख भाल करने की आवश्यकता है। जन्म जात स्थिर लक्षणों से पुराने और बारीक संस्कारों का ही पता चलता है, इसलिए किसी कुरूप को देखकर बुरा होने और सुन्दर को देखकर अच्छा होने का फैसला न कर लेना चाहिए वरन् उसके अस्थायी लक्षणों का हाव भाव, दृष्टि, होठों का भाव, चाल

ढाल, रहन सहन आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जन्म जात स्थिर लक्षण तथा ढांचे की बनावट, स्वभाव परिवर्तन के साथ बहुत थोड़े अंशों में बदलते हैं परन्तु अस्थायी लक्षण बहुत जल्द बदल जाते हैं, इसलिए स्थिर लक्षणों की अपेक्षा अस्थिर लक्षणों पर विचार करने से ही वर्तमान गुण स्वभावों का अधिक अच्छा पता चलता है।

तीसरी बात यह ध्यान रहने की है कि किसी के शुभ लक्षणों को तो निस्संकोच प्रकट कर देना चाहिए परन्तु कुलक्षणों सम्बन्धी धारणा प्रकाशित करने में बहुत संयम से काम लेना चाहिए। क्योंकि कदाचित् किसी भूल के कारण वे लक्षण ठीक न निकले तो अकारण ही घृणा कलह द्वेष तथा दुर्भाव बढ़ेगा, दूसरे वह व्यक्ति यह विश्वास कर बैठा कि—मेरे तो लक्षण ईश्वर ने ही दुर्गुणी होने के बनाये हैं तो वह निराश होकर अपनी बुराइयां छोड़ने का प्रयत्न न करेगा। अतएव जहां तक हो सके दूसरों को प्रोत्साहित करने, उनके सद्गुण प्रकाशित करने तथा आत्म गौरव एवं महानता की भावनाएं जगाने के लिए ही इस विद्या का उपयोग करना चाहिए। किसी व्यक्ति के बुरे चिन्हों को देख कर स्वयं सावधान रहना तो ठीक है पर उसे बदनाम तथा हतोत्साह करके निराश, निर्लज्ज तथा शत्रु बनाना उचित नहीं। आकृति विद्या के अभ्यासियों को इन सब आवश्यक बातों की चेतावनी देते हुए, इस पुस्तक को समाप्त करते हैं।

मुद्रक—श्यामलाल भार्गव, श्याम प्रेस मथुरा।

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें।

यह बाजारू किताबें नहीं है, इनकी एक एक पंक्ति के पीछे गहरा अनुभव और अनुसंधान है। विनम्र शब्दों में हमारा दावा है कि इतना खोज पूर्ण अलभ्य साहित्य इतने स्वल्प मूल्य में अन्यत्र नहीं मिल सकता।

१—मैं क्या हूं ?	|=)
२—सूर्य चिकित्सा विज्ञान	|=)
३—प्राण चिकित्सा विज्ञान	|=)
४—पर काया प्रवेश	|=)
५—स्वस्थ और सुन्दर बनने की अद्भुत विद्या	|=)
६—मानवीय विद्युत के चमत्कार	|=)
७—स्वर योग से दिव्य ज्ञान	|=)
८—भोग में योग	|=)
९—बुद्धि बढ़ाने के उपाय	|=)
१०—धनवान बनने के गुप्त रहस्य	|=)
११—पुत्र या पुत्री उत्पन्न करने की विधि	|=)
१२—वशीकरण की सच्ची सिद्धि	|=)
१३—मरने के बाद हमारा क्या होता है ?	|=)
१४—जीव जन्तुओं की बोली समझना	|=)
१५—ईश्वर कौन है ? कहाँ है ? कैसा है ?	|=)
१६—क्या धर्म ? क्या अधर्म ?	|=)
१७—गहना कर्मणोगतिः	|=)
१८—जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्विक प्रकाश	|=)
१९—पंचाध्यायी	||-)

२०—शक्ति संचय के पथ पर |=)
२१—आत्म गौरव की साधना |=)
२२—प्रतिष्ठा का उच्च सोपान |=)
२३—मित्र भाव बढ़ाने की कला |=)
२४—आन्तरिक उल्लास का विकाश |=)
२५—आगे बढ़ने की तैयारी |=)
२६—आध्यात्म धर्म का अवलम्बन |=)
२७—ब्रह्म विद्या का रहस्योद्घाटन |=)
२८—ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग |=)
२९—यम और नियम |=)
३०—आसन और प्राणायाम |=)
३१—प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि |=)
३२—तुलसी के अमृतोपम गुण |=)
३३—आकृति देखकर मनुष्य की पहचान |=)
३४—मैस्मरेजम की अनुभव पूर्ण शिक्षा |=)
३५—ईश्वर और स्वर्ग की प्राप्ति का सच्चा मार्ग |=)
३६—हस्त रेखा विज्ञान |=)
३७—विवेक सतसई |=) ३८—संजीवन विद्या |=)

कमीशन देना कतई बन्द है। हाँ, आठ या इससे अधिक पुस्तकें लेने पर डाक खर्च हम अपना लगा देते हैं। आठ से कम पुस्तकें लेने पर डाक खर्च ग्राहक के जिम्मे है।

मैनेजर—'अखण्ड-ज्योति' कार्यालय, मथुरा।

मुद्रक—पं० हरचरन लाल शर्मा, पुष्पराज प्रिंटिंग वर्क्स, मथुरा।